Progressive Ideology in the Songs of Gopaldas Neeraj

"गोपाल दास नीरज के गीतों में प्रगतिशील विचारधारा"

Tambure Jaychand Anantrao*1, **Dr. Avneesh Kumar***2

*(Research Scholar*1 & Supervisor*2, OF Dr. A.P.J. Abdul Kalam University, Indore, Madhya Pradesh, India)*

तांबुरे जयचन्द अनन्तराव'1 डॉ. अवनीश कुमार'2

(शोधर्थी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत)'1
(मार्गदर्शक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत)'2

Article Received : 06/03/2021 **Accepted : 04/05/2021** **Published: 15/06/2021**

प्रस्तावना

नीरज ने फिल्म जगत के रूढ़िगत ढाँचे को तोड़ने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। पं0 भवनी प्रसाद मिश्र, जिन्होंने पूर्व में 'स्वयं सिद्धा' के गीत लिखे थे, उन्होंने सर्वोदयी दृष्टिकोण को अपनाया था; उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए नीरज भी वर्तमान में ग्रामीण अंचलों में जाकर अपनी कविताओं के माध्यम से जन–जागरण का संकल्प व्यक्त करते हैं। यद्यपि उनके प्रारम्भिक फिल्मी कार्यो से लेकर 'नई उमर की नई फसल' से 'तेरे मेरे सपने' तक के कालखंड में लगभग एक दशक से अधिक समय व्यतीत हुआ, तथापि उनके फिल्मी गीतों की संख्या अन्य गीतकारों की अपेक्षा अपेक्षाकृत कम रही है। फिर भी सामान्य संघर्षों के पश्चात् उन्होंने स्वयं को प्रथम श्रेणी के गीतकारों में सुदृढ़ रूप से स्थापित किया। विगत दस से बारह वर्षों के दौरान नीरज ने 'नई उमर की नई फसल', 'प्रेम पुजारी', 'पहचान', 'चंदा और बिजली', 'तू ही मेरी जिन्दगी', 'तेरे मेरे सपने', 'शर्मीली', 'गेम्बलर', 'लाल पत्थर' तथा 'मेरा नाम जोकर' आदि फिल्मों के लिए गीत रचना की। इन फिल्मों में उन्होंने शंकर–जय किशन तथा एस. डी. बर्मन जैसे प्रतिष्ठित संगीतकारों के साथ कार्य किया। विशेषतः 'नई उमर की नई फसल', 'चंदा और बिजली' तथा 'तेरे मेरे सपने' के गीतों को उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई।

'नई उमर की नई फसल' एक युवा–केन्द्रित फिल्म थी, जिसका मूल विषय महाविद्यालयीन चुनाव–राजनीति से सम्बन्धित था, जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में अपेक्षाकृत दुर्लभ प्रतीत होता है। इसके प्रसिद्ध गीत 'कारवाँ गुजर गया, गुबार देखते रहे' में तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ का सजीव एवं यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

कवि केवल युग–निर्माता ही नहीं, बल्कि युग–द्रष्टा भी होता है– यह तथ्य यहाँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उक्त फिल्म में प्रस्तुत चुनाव–राजनीति की जो भविष्यवाणी की गई थी, वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिकता प्रतीत होती है, यद्यपि वह फिल्म आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व बनाई गई थी।

इस प्रकार की मौलिक, विशेष एवं दूरदर्शी कल्पनाशीलता फिल्मी गीतों में अत्यन्त विरल मानी जाती है।

[This domain represents one in which the poet attained notable accomplishment. Bhawani Prasad Mishra, who earlier composed "Swayam Siddha ke Geet," subsequently embraced the philosophy of Sarvodaya. In a similar spirit, Gopaldas Neeraj also aspired to reach rural communities and inspire social awakening through his poetry. However, despite a period spanning slightly more than a decade—from "Nai Umar Ki Nai Fasal" to "Tere Mere Sapne"—the number of his film songs remained comparatively limited in relation to his broader poetic output.

Nevertheless, Neeraj established himself among the leading lyricists only after enduring significant struggle. Over the course of ten to twelve years, he contributed lyrics to several notable films, including "Nai Umar Ki Nai Fasal," "Prem Pujari," "Pehchan," "Chanda Aur Bijli," "Tu Hi Meri Zindagi," "Tere Mere Sapne," "Sharmilee," "Jewel Thief," "Gambler," "Lal Patthar," and "Mera Naam Joker." In doing so, he collaborated with distinguished composers such as Shankar–Jaikishan and Sachin Dev Burman. His songs in films like "Nai Umar Ki Nai Fasal," "Chanda Aur Bijli," and "Tere Mere Sapne" achieved considerable acclaim. Notably, "Nai Umar Ki Nai Fasal" was a youth-centric film that addressed the theme of college electoral politics—an aspect that has become relatively uncommon in contemporary cinema. The iconic line "Karvan guzar gaya, gubar dekhte rahe" offers a vivid and precise reflection of this socio-political reality.

A poet, in this context, emerges not merely as a creator of his time but also as a perceptive visionary. The film anticipated the dynamics of present-day electoral politics, despite having been produced nearly fifteen years earlier. Such originality and imaginative depth were seldom encountered in film songs of that era.]

'स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से, लुट गये सिंगार सभी बाग के
बबूल से और हम खड़े खड़े बहार देखते रहे कारवां गुजर गया गुबार
देखते रहे' (नयी उमर की नयी फसल)

इस प्रकार की काव्यत्विक अभिव्यक्ति ने दर्शकों को एक नवीन अनुभूति प्रदान करते हुए उन्हें गहराई से प्रभावित किया। जिनका काव्यबोध मुख्यतः फिल्मी गीतों के माध्यम से विकसित होता रहा है, अथवा जो कवि सम्मेलनों में प्रस्तुत कवितों के ज्ञान एवं काव्य गौरवा का मूल्यांकन फिल्मी गीतों के आधार पर करते हैं, वे भी इस प्रकार की अभिव्यक्ति से आश्चर्यचकित रह गए।

उदाहरणस्वरुप, **'नई उमर की नई फसल'** फिल्म के एक गीत में दुल्हन के आगमन का उल्लासपूर्ण एवं परम्परागत चित्रण प्रस्तुत किया गया है– जहाँ ढोल की ध्वनि, चरणों की आहट एवं ग्रामीण जीवन का सामूहिक उत्सा ह सजीव रूप में उभरता है। समस्त गाँव उस दृश्य में सम्मिलित होकर हर्षोल्लास से भर उठता है।

किन्तु इसी उल्लासपूर्ण परिवेश के मध्य अचानक एक करुण एवं विडम्बनापूर्ण मोड़ आ जाता है– जहाँ दुल्हन की माँग का सिन्दूर मिट जाता है, चुनरी तार–तार हो जाती है और सुखक दृश्य शोकपूर्ण परिवेश में परिवर्तित हो जाता है। इस परिवर्तन को कवि ने अत्यन्त संवेदनशीलता एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार, गीत में उल्लास एवं विषाद के द्वंद्वात्मक चित्रण के माध्यम से जीवन की अनिश्चतता एवं यथार्थ की कठोरता को अत्यन्त सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया गया है, जो न केवल श्रोताओं को भाव–विभोर करता है, बल्कि उन्हें गहन चिंतन के लिए भी प्रेरित करता है।

[The composition once produced a profound sense of astonishment among audiences. Even those whose literary sensibilities were shaped primarily by film songs, or who tended to evaluate poetic merit solely through such compositions, found themselves deeply surprised and captivated.

The scene portrays a vivid and emotionally charged depiction of a bridal departure: the bride sets out in a ceremonial procession, accompanied by the rhythmic beats of drums and an atmosphere filled with festivity, as each step appears radiant and celebratory. The entire village gathers, their eyes brimming with emotion, collectively witnessing the poignant moment. However, this joyous setting undergoes a sudden and dramatic

transformation into tragedy—misfortune strikes abruptly, likened to a lightning bolt, and the celebratory symbols of marriage are destroyed, with the vermilion erased and the bridal veil torn apart.

In contrast to this unfolding turmoil, the observer remains distant and detached, standing as a silent witness while the palanquin bearers carry the bride away. This striking juxtaposition of festivity and catastrophe creates a deeply moving and symbolic representation, as seen in the film "Nai Umar Ki Nai Fasal."]

उपरोक्त विस्तृत गीत में बाहर, दुल्हन, पालकी, कहार आदि प्रतीकों के माध्यम से कवि ने नायक–नायिका की आशा–निराशा, अवसाद, जड़ता तथा विषाद का सजीव चित्रण किया है।

'गाँवड़े गाँव में ऊँट का तमाशा' जैसे इस गीत ने फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व ही जनता को भावविभोर कर दिया था। इस प्रकार, फिल्मी गीतों के क्षितिज पर एक नए सूरज के उदय की आशा हिन्दी प्रेमिकों को हुई थी। 'नीरज फिल्मीं में पहुँच गया' एवं 'नीरज अब फिल्मीं में गीत लिखेगा' जैसे वचनों के साथ यह चर्चा प्रचलित थी।

उल्लेखनीय यह है कि जिस प्रकार 'प्यासा' फिल्म में साहिर की नज़्मों एवं ग़ज़लों के लिए विशिष्ट परिस्थितियाँ निर्मित की गई थी, उसी प्रकार नीरज के लगभग सभी पूर्वलिखित गीतों को उपरोक्त फिल्म में कथा–परिस्थितियों के अनुरूप रूपांरित किया गया था।

नीरज श्रंगार एवं अंगार के कवि हैं। उनके गीत मंच के माध्यम से आज भी हिन्दी प्रेमी जनता की जबान पर विद्यमान हैं। फिल्मीं के माध्यम से उनकी लोकप्रियता में और अभिवद्धि हुई तथा उनके गीतों ने सामान्य जन तक पहुँच बनाने में सफलता प्राप्त की।

कुछ फिल्मी गीतों में श्रंगार रस का विशेष निरूपण दष्टव्य है–

[In this extended composition, the poet employs symbolic elements such as spring, the bride, the palanquin, and the bearers to articulate the emotional spectrum of the protagonists, encompassing hope and disillusionment, despair, inertia, and sorrow. Much like a rare spectacle that captivates attention in a rural fair, the song had already evoked a deep emotional response among audiences even prior to the film's release.

At the level of film music, this created an anticipation among Hindi audiences for the emergence of a new creative force. There was widespread discussion that Gopaldas Neeraj had entered the world of cinema and would now be contributing songs to films. It is significant to note that, similar to the film "Pyaasa", where specific narrative situations were constructed to accommodate the poetry and ghazals of Sahir Ludhianvi, Neeraj's pre-existing poetic compositions were likewise adapted and integrated into the cinematic narrative.

Neeraj may be regarded as a poet who harmonizes romantic sensibility with emotional intensity. His songs continue to resonate with Hindi audiences, particularly through stage performances, where they remain widely appreciated. The medium of cinema further enhanced his popularity, enabling his poetry to reach a broader, more diverse audience. In several of his film songs, the expression of romantic sentiment is particularly prominent and artistically refined.]

देखती ही रहो आज दर्पन न तुम, प्यार का ये महूरत निकल जायेगा

(नयी उमर की नयी फसल)

साँस की तो बहुत तेज रफ्तार है और छोटी बहुत है मिलन की घड़ी

(नयी उमर की नयी फसल)

गूँथते गूँथते ये घटा साँवरी चमक न जाये कहीं रूप की फुलझड़ी

(नयी उमर की नयी फसल)

चूड़ियाँ ही न तुम खनकाती रहो ये शरम सार मौसम बदल जायेगा....

(नयी उमर की नयी फसल)

नवपरिणिता वासक सज्जा स्वकीया (पत्नी) के सौन्दर्य एवं नख–शिख श्रंगार का दिव्य एवं भव्य चित्रण प्रस्तुत किया गया है। पूर्ण गीत ऐसा प्रतीत होता है मानो रस राज श्रंगार को मूर्तिमान रूप प्रदान कर दिया गया हो।

इस गीत की सभी उपमाएँ अत्यन्त अनूठी हैं, भाव–अभिव्यक्तियाँ सार्थक हैं तथा रस की दृष्टि से पूर्णतः परिपूर्ण हैं।

[The song offers a sublime and aesthetically rich depiction of the newly wedded beloved, presenting her beauty and complete adornment—from head to toe—in a grand and evocative manner. The composition appears to embody the very essence of romantic sentiment, as though it has been artistically personified. The similes employed throughout are distinctive and imaginative, while the emotional expressions are both meaningful and refined. Overall, the song is marked by a high degree of aesthetic elegance and poetic sophistication.]

'सुर्ख ओठों पे ये हँसी मदभरी जैसे शबनम अगारों की मेहमान हो

जादू बनती हुई, ये नशीली नजर, देख ले तो खुदाई परेशान हो'

(नयी उमर की नयी फसल)

नायिका के अंग–अंग में रति का वास दिखाई देता है, उसकी अलकं, पलकें, ओष्ठ, चितवन, मुस्कान तथा बालों का गूँथन नायक अथवा प्रेमी के मन को आकृषित करता है।

नायक अपलक दष्टि से युवा सौन्दर्य का अवसोकन करता है तथा उसकी आकर्षणता में पूर्णतः मिला रहता है। काम एवं कामिनी दोनों का अद्भुत समन्वय यहाँ दष्टव्य है।

[The heroine is depicted as embodying an all-pervasive aura of love and sensuality, with each aspect of her physical presence contributing to this effect. Her curls, eyelashes, lips, expressive glances, smile, and the arrangement of her hair collectively exert a captivating influence, holding the attention and emotions of the hero or lover. The hero, in turn, contemplates her youthful beauty with an unwavering and absorbed gaze. Through this depiction, the composition presents a striking and harmonious interplay between desire and the beloved, rendered with vivid clarity and aesthetic finesse.]

'चाल ऐसी है मदहोश मस्ती भरी, नींद चाँद और सितारों को आने लगे,

इतने नाजुक कदम चूम पाये अगर, सोते सोते बियाबान गाने लगे, मत

महावर रचाओ बहुत पाँवों में, फर्श का मर–मरी दिल दहल जायेगा।'

(नयी उमर की नयी फसल)

नीरज ने युवा सौन्दर्य के नख–शिख श्रृंगार तथा उसके प्रेमी के मन पर पड़ने वाले प्रभाव की सजीव अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। गजल की नाजुक–ख्याली भी इस गीत में स्पष्ट रूप से विद्यमान है। 'मेरा मन तेरा, प्यासा, पूरी होगी मन की अभिलाषा.....

अपने ओठों की बंशी बना ले मुझे, मेरी साँसों में तेरी साँस घुल जाये,

अपनी बाँहों का घूँघट उड़ा दे मुझे, प्यार की कहीं डोली ना निकल

जाये, अपने दामन की खुशबू बना ले मुझे, दिल के सीने में कोई फूल

खिल जाये।' (गैम्बलर)

उपर्युक्त सभी गीतों में गीतकार ने उर्दू शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया है। यह प्रयोग भाव एवं तुकगाति की संगति के लिए आवश्यक भी प्रतीत होता है। इस प्रकार एक नवीन एवं अनूठी कल्पना पुनः प्रस्तुत होती है।

[In all these songs, the lyricist has made sufficient use of Urdu words, which is also essential for maintaining the harmony of emotions and rhyme. Once again, a fresh and unique imagination is presented.]

'जब राधा ने माला जपी श्याम की, मैंने ओढ़ी चुनरिया तेरे नाम की,

डोर क्या बँधी, प्रीत क्या जुड़ी, बिना यतन बिना जतन हो गई मैं नई,

बिना बोल के मैं बिकी, बिना दाम की, क्या तरंग है क्या उमंग है,

मोरे अंग अंग रचा पी का रंग है शरमाई कैसे कहूँ बात श्याम की,

पा लिया तुझे पाई हर खुशी, चाहूँ बार बार पिया चढ़ूँ में तोरी पालकी,

सुबह श्याम की ये प्यास बड़े काम की।'

प्रेमी युगल के पूर्वराग श्रृंगार का मादक एवं जीवन्त चिणिं है–

'जीवन की बगिया महकेगी, चहकेगी, लहकेगी' और 'आज मैंने कसम ली'

इन गीतों से दाम्पत्य प्रेम, उनकी भावी संतति की रसभरी कल्पना, पति–पत्नी का प्यार तथा पारस्परिक छेड़छाड़ आदि भावनाओं की अत्यन्त रसभीनी, मादक एवं आकर्षक अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। यह स्थिति प्रायः प्रत्येक प्रेमी अथवा पति के जीवन में कभी न कभी आवश्य आती है।

इस से पूर्व इन स्थितियों का इतना सुन्दर एवं सजीव प्रस्तुतीकरण कभी नहीं किया गया था। संयोग के साथ–साथ विरह गीतों में भी गीतकार ने अपनी विरहानुभूतियों की फिल्मी गीतों में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

[Through these songs, one encounters richly evocative and aesthetically engaging portrayals of conjugal love, including tender imaginings of future progeny, the affectionate bond between husband and wife, and their playful interpersonal dynamics. Such emotional experiences are, in essence, integral to the lives of most lovers or married individuals at various stages. Prior to this, these dimensions had rarely been rendered with such artistic refinement and sensitivity. Moreover, alongside themes of union, the lyricist has also articulated the experience of separation with considerable emotional depth. In these compositions, feelings of longing and estrangement are expressed with a poignant intensity, further enhancing the emotional range and literary value of his film songs.]

'आज की रात बड़ी शोख बड़ी नटखट है, आज तो तेरे बिना नींद नहीं आयेगी, आज तो तेरे यहाँ आने का ही मौसम है, आज तबीयत भी न ख्यालों से बहल पायेगी।' (नयी उमर की नयी फसल)

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका की प्रतीक्षा में बेचैन है। वह प्रेमिका के आगमन के विचारों में खोया हुआ है। सावन का मौसम है। बिजलियाँ रह–रह कर चमक उठती हैं तथा मादक पुरवाई तन–मन को उत्तेजित कर देती है।

इन क्षणों में प्रेमी हृदय पर क्या गुजरती है, उसका सजीव दृश्य चित्रण नीरज ने अपने गीतों में अंकित किया है।

[The lover is portrayed in a state of restlessness as he awaits the arrival of his beloved, his mind wholly absorbed in thoughts of her presence. Set against the backdrop of the monsoon season, recurring flashes of lightning and the sensuous, stirring breeze evoke an atmosphere charged with emotional intensity, affecting both body and mind. Within such moments, Gopaldas Neeraj vividly and realistically captures the inner turmoil and emotional experience of the lover through his lyrical expression.]

'देख वो छत पे से उतर आई है सावन की घटा, दे रही द्वार पर आवाज
खड़ी पुरवाई, बिजुरी रह रहकर पहाड़ों में चमक उठती है, सूनी आखें
ख्वाब ले ज्यों अँगड़ाई, कैसे समझाऊँ कि इस बात का मतलब क्या है,
दिल की ये बात है, ओठों से न कही जायेगी।'

(नयी उमर की नदी फसल)

और दिन, यदि प्रेमिका से मिलन न हो तो कोई बात नहीं, किन्तु आज तो मौसम भी मन के साथ बेईमान हो गया है। पूर्व की मिलन स्मृतियाँ मस्तिष्क को झकझोरती हैं–

[On ordinary occasions, the absence of the beloved may not significantly disturb the lover; however, on this particular day, even the atmosphere appears to mirror his inner unrest, as though it too has turned indifferent. The memories of their past encounters persistently resurface, agitating his mind and intensifying his emotional turmoil.]

'रात रानी की नशीली सी ये भींगी खुशबू, आ रही है जो छन छन के
घनी डालों से ऐसा लगता है, किसी ढेढ़ झकोर से लिपट खेल आई हैं
तेरे उलझे हुए बालों से, और बेजार न कर, मेरे तड़पते दिल की ऐसी
रंगीन नजर रात फिर न आयेगी।' (नयी उमर की नदी फसल)

प्रेमी अथवा कवि ने नासापुटों में रात की रानी की सुँगध प्रियतमा के काले लंबे घुंघराले बालों की स्मृति को तरोताजा कर देती है। प्रकृति का मानवीकरण रूप भी द्रष्टव्य है–

[The lover, or poet, becomes immersed in the fragrance of the night-blooming flower Raat Rani, whose pervasive scent evokes vivid recollections of his beloved's long, dark, and flowing curls. In this depiction, the natural environment is not merely a backdrop but assumes a personified presence, actively participating in and intensifying the emotional experience.]

एक विरहिणी नायिका की विरह की रात्रि का जीवन्त चित्रण है–

'मेघा छाये आधी रात, बैरन बन गई निंदिया बता दे मैं क्या करूँ?

सबके आँगन दिया जले रे, मोरे आँगन जिया, हवा लागे शूल

जैसी ताना मारे चुनरिया, आई हैं आँसु की बारात, रूठ गये रे सपने

सारे, टूट गई रे आशा, नयन बहें अँगना मो रे, फिर भी मन हैं प्यासा

कैसे कहूँ रे, मन की बात' (शर्मीली)

मुग्धा कुमारी नायिका भविष्य के सुनहरे स्वप्नों से निराश हो उठी है। रात्रि के एकांत में वह भयभीत प्रतीत होती है। प्रेम की असफलता के कारण उसके मन में नैराश्य एवं अवसाद की स्थिति उत्पन्न होती है, जिसका सजीव चित्रण किया गया है।

भावानुरुप भाषा के साथ नए उपमान भी सटीक एवं प्रभावशाली हैं। विरहिणी के दुःख एवं विषाद से युक्त सूक्ष्म मनभावनाओं को मनोविज्ञानपरक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

[The naïve young heroine is depicted as gradually losing hope as her cherished visions of the future begin to dissolve. Enveloped in the solitude of the night, she experiences a deep sense of fear and vulnerability. The failure of love gives rise to profound disappointment and despair within her, which is portrayed with striking vividness. The language employed is emotionally attuned, complemented by fresh and precise similes that enhance the expressive quality of the narrative. Furthermore, the delicate emotions of sorrow and grief associated with separation are rendered with notable psychological depth and sensitivity.]

'खिलते हैं गुल यहाँ खिल के बिखरने को, मिलते हैं दिल यहाँ मिल के बिछड़ने को, कल रहे ना रहे मौसम ये प्यार का, कल रुके ना रुके डोला बहार का, झीलों के ओठों पर मेघों का राग है, फूलों के सीने में ठंडी ठंडी आग है, दिल के आईने में तू समाँ उतार ले, चार पल मिले जो

आज प्यार में गुजार दे, प्यासा है दिल सनम, प्यासी ये रात है, ओठों

में दबी दबी कोई मीठी बात है.....' (शर्मीली)

उपरोक्त गीत में नायक अपनी प्रेमिका का आह्वान करता है। प्रकृति की मादक पृष्ठभूमि में गीतकार ने यह दर्शाने की चेष्टा की है कि जीवन में विरह एवं दर्द ही शाश्वत हैं।

मिलन की घड़ियाँ तो जीवन के महासागर में छोटे–छोटे द्वीपों के समान कभी–कभी आती हैं।

[In the song, the hero is portrayed as calling out to his beloved. Set against the sensuous and evocative backdrop of nature, the lyricist seeks to convey the idea that separation and suffering are enduring aspects of human existence, whereas moments of union are fleeting and infrequent—appearing only occasionally, like isolated islands dispersed across the vast ocean of life.]

'रंगीला रे तेरे रंग में रंग गया है मेरा मन, न बुझे है किसी जल से

ये जलन....' (प्रेम पुजारी)

'जल' शब्द का दोनों अर्थों में सार्थक एवं चमत्कारिक प्रयोग है।

संयोग एवं वियोग से अतरिक्त, गीतकार ने 'ऐ भाई जरा देख के चलो' गीत के माध्यम से हास्य एवं व्यंग्य की प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है, जो 'मेरा नाम जोकर' फिल्म में समाहित है। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि–

[Apart from themes of union and separation, the lyricist has also expressed humor and satire in the song "Ae Bhai Zara Dekh Ke Chalo" from the film Mera Naam Joker. This is noteworthy.]

'ऐ भाई जरा देख के चलो आगे ही नहीं पीछे भी ऊपर ही नहीं नीचे भी
गिरने से डरता है क्यों, मरने से डरता है क्यों, तू जहाँ आया है वो तेरा
घर नहीं, गाँव नहीं गली नहीं, दुनियाँ में और प्यारे सर्कस में बड़े को
भी छोटे को भी, खरे को भी खोटे को भी नीचे से ऊपर और ऊपर से
नीचे को आना जाना पड़ता है, तरह–तरह के नाच दिखाना पड़ता है
हीरो से जोकर बन जाना पड़ता है, क्या ये करिश्मा, कैसा ये खिलवाड़
है, जानवर आदमी से ज्यादा वफादार है, और इंसान ये माल जिसका
खाता है प्यार जिससे पाता है, गीत जिसके गाता है, उसके ही सीने में
भोंकता कटार है कहिये श्रीमान् आपका क्या विचार है।'

(मेरा नाम जोकर)

संयोग तथा वियोग के अतिरिक्त, गीतकार ने 'ऐ भाई जरा देख के चलो' गीत के माध्यम से हास्य एवं व्यंग्य को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है, जो 'मेरा नाम जोकर' फिल्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट होता है कि–

[Through this song, the lyricist critically reveals the self-serving and egocentric tendencies prevalent in contemporary society, along with the underlying realities of human relationships. It brings to light the essential truths of the modern age while offering a nuanced reflection on the tension between human resilience and vulnerability.]

'तू ही मेरी जिन्दगी' चलचित्र में गीतकार ने अंगार के गीत लिखे हैं। किसी शहीद के बलिदान पर नीरज का श्रद्धांजलि–गीत प्रस्तुत है।

'ये कौन थक के सो रहा है, गुलमुहर की छाँव में, ये फूल है कि आग है
आग है चिराग है, जगाओ मत इसे कि फिर सुलग उठेगी चिनगारियाँ
गरज उठेगीं बदलियाँ, तड़फ उठेगीं बिजलियां, थकान खोने दो इसे
सपन पिराने दो इसे, ये मुफलिसों का ताज है।'

(तू ही मेरी जिन्दगी)

उल्लेखनीय है कि नीरज के इन सभी गीतों पर सीलोन–रेडियो द्वारा प्रसारण पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। विश्व की समस्त क्रांति, बगावत एवं उथल–पुथल के मूल में मानव का खून ही निहित होता है। नीरज ने उस रक्त की महत्ता को रेखांकित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि मानव के खून का बहना कभी व्यर्थ नहीं जाता।

[It is significant to note that these songs of Gopaldas Neeraj were, at one time, prohibited from broadcast by Radio Ceylon. The lyricist advances the idea that all revolutions, uprisings, and social upheavals ultimately originate in human sacrifice and struggle. By underscoring the symbolic and moral weight of human

blood, Neeraj suggests that such sacrifice is never futile, but rather carries enduring significance within the course of history.]

'मायूस न हो ऐ मेरे वतन, आँसू से न धोये लाल कफन, मिटकर भी
नहीं मिट पायेगा, आदम का लहू, यूं ही आजादी लाता है आदम का लहू,
आया बनकर गाँधी वो कभी, जागा बनकर सुकरात कभी, बोला बन
कर मंसूर कभी, चीखा बनकर फरहाद कभी, सौ भेष बदलकर आता
है, आदम का लहू आदम का लहू..... (तू ही मेरी जिंदगी)

'ऐ मेरे प्यारे वतन, तू ही मेरी जिन्दगी, सर पर मुकुट हिमालय का
सीना है तेरा विन्ध्याचल, बालों में बंगाल की बदली, आँखों में है तेरी
गंगाजल, हाथ कट जाये लेकिन तिरंगा फिर भी लहराता रहे, सर
कलम हो जाये फिर भी मुस्कुराता रहे, अपना हर नारा फलक
से जा के टकराता रहे, जिन्दगी को ठुकराओ अब मौत से नाता रहे'

(स्वदेश–प्रेम)

मेरे हिमालय के पास बानो, मेरे गुलिस्ता के बागबानो, उठो कि सदियों की नींद तजकर तुम्हें वतन फिर पुकारता है–

(भारतवासियों का आव्हान)

गंगा की कसम, जमुना की कसम, बस एक कदम बस एक कदम,

(युद्ध प्रयाण का आव्हान)

नीरज के गीतों में कटु यथार्थ के साथ करुणा के भी दर्शन होते हैं– भूख ही उस मजहब का आधार है, जिसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। यहाँ जीवन की वास्तविकता ऐसी है कि आँखें भर आती हैं। रात जो किसी कली का ब्याह करती है, वही सुबह उसे वेश्या बना देती है। इस प्रकार इस कूप में रहने वाली प्रत्येक नारी की पहचान एक समान हो जाती है।

यहाँ पैसे की पहचान है, किन्तु मनुष्य की कीमत का कोई महत्व नहीं रह जाता। इस बस्ती से दूर रहने की सलाह दी जाती है, क्योंकि यहाँ सच्चे अर्थों में प्रेम का अभाव है।

नीरज ने अपनी पैनी कलम के माध्यम से समाज की 'नासूर' समस्या अर्थात् 'वैश्यावृत्ति' का भी सजीव चित्रण किया है। अंततः 'कालका पहिया' भक्ति एवं दर्शन के गीतों में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में उभरता है।

कर्म–भाग्य, पाप–पुण्य एवं सुख–दुःख जैसे जीवन के विविध पक्षों का गीतकार ने गहन्ता से विश्लेषण किया है। कथास्थिति, शब्द एवं भावनाओं का अद्भुत ताल–मेल इस गीत में स्पष्ट रूप से दृश्ट होता है। कवि का जीवन दर्शन यहाँ पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है।

[In the songs of Gopaldas Neeraj, a profound sense of compassion coexists with an unflinching portrayal of harsh reality. He presents a social landscape in which hunger itself assumes the role of religion and truth appears to be absent; where life is marked by such suffering that it evokes tears; where the fragility of existence is evident in the transformation of a bride into a widow within a single night; and where, in morally degraded spaces, identity is reduced to economic value, rendering human dignity insignificant and genuine affection virtually nonexistent. Through his incisive and expressive poetic voice, Neeraj also brings attention to the deeply entrenched social evil of prostitution, depicting it with sensitivity and critical insight. Furthermore, "Kaal Ka

Pahiya" emerges as a landmark among his philosophical and devotional compositions. In this work, the lyricist engages with fundamental existential themes such as action and fate, sin and virtue, and joy and suffering. The song demonstrates a striking coherence between narrative context, linguistic expression, and emotional depth, ultimately articulating the poet's distinct philosophy of life with clarity and force.]

'काल का पहिया घूमे भैया, लाख तरह इंसान चले, लेके चले बारात कभी तो कभी बिना सामान चले, साथ न जिसके चलता कोई उसके संग भगवान चले, भूले न पापी मगर पाप की ज्यादा नहीं दुकान चले कैसे वो मालिक दीखे तुझको साथ तेरे अभिमान चले, कर्म अगर अच्छा है तेरा किस्मत तेरी दासी है, दिल है तेरा साफ तो प्यारे घर में मथुरा काशी है, सच्चाई की राह चलो रे, जब तक जीवन प्राण चले, राम कृष्ण हरी राम कृष्ण हरि....' (चंदा और बिजली, 1969)

संदर्भ

1. नीरज रचनावली–2, पृ.सं. 249
2. नीरज का काव्य : एक विश्लेषण– पृ.सं. 143
3. कारवाँ गुजर गया– नीरज, पृ.सं. 29
4. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य समीक्षा एवं विवेचना– डo0 विश्वनाथ सिंह पृ.सं. 49
5. श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन, संपादक– कन्हैयालाल नंदन पृ.सं. 39
6. हिन्दी ग़ज़ल की विकासयात्रा– ज्ञान प्रकाश विवेक, पृ.सं. 27
7. नीरज रचनावली–2, पृ.सं. 249
8. नीरज का काव्य : एक विश्लेषण– पृ.सं. 143
9. कारवाँ गुजर गया– नीरज, पृ.सं. 29
10. आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य समीक्षा एवं विवेचना– डo0 विश्वनाथ सिंह पृ.सं. 49
11. श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन, संपादक– कन्हैयालाल नंदन पृ.सं. 39
12. हिन्दी ग़ज़ल की विकासयात्रा– ज्ञान प्रकाश विवेक, पृ.सं. 27